नाद-नर्तन
जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक

UGC-CARE Listed ISSN: 2349-4654
वर्ष : 12, अंक : 1, जनवरी 2024

अखिल भारतीय फिल्म के संगीत का संपूर्ण भारत पर प्रभाव

आस्था खरे
शोधार्थी, संगीत एवं ललित कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सार-संक्षेप

अखिल भारतीय फिल्म को अंग्रेजी भाषा में पैन इंडियन फिल्म भी कहा जाता है। वर्तमान समय में यह शब्द अत्यंत प्रचलित हो गया है। भारत में पहली अखिल भारतीय फिल्म सन् 1959 में रिलीज हो चुकी थी जिसका नाम था 'महिषासुर मर्दिनीह्य। यद्यपि यह फिल्म अखिल भारतीय फिल्म की श्रेणी में आने वाली प्रथम फिल्म थी परन्तु वास्तव में पहली पैन इंडियन फिल्म सन् 2015 में आयी सुपरहिट फिल्म 'बाहुबली-द बिगनिंग' थी। इस फिल्म का निर्देशन एस. एस. राजामौली ने किया था तथा संगीत एम. एम. किरवानी ने दिया था। ये कहना अतिश्योक्ति न होगा कि भारत के घर-घर में इस फिल्म का गीत सुना व सराहा गया। यह फिल्म सम्पूर्ण भारत में अनेक भाषाओं में रिलीज हुई। बाहुबली देश के हर वर्ग के दर्शकों द्वारा बेहद पसंद की गई तथा अति सफल साबित हुई। हाल ही में आयी अखिल भारतीय फिल्म 'आर आर आर' के गीत 'नाटू-नाटू' ने आस्कर जीत के जो असाधारण कार्य किया है उससे हर कोई अवगत है तथा इस सम्मान से प्रत्येक भारतवासी गौरवान्वित है। प्रस्तुत शोध-पत्र में अखिल भारतीय फिल्म की शुरूआत से वर्तमान तक की सफल यात्रा के विषय में वर्णित करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द–पैन इंडियन फिल्म, डब फिल्म, बाहुबली, एस.एस. राजामौली।

शोध-पत्र

नमस्ते, नमस्कारम्, सत् श्री अकाल, खम्माघणी, राम राम, जय श्री कृष्णा, वड़क्कम इन शब्दों का प्रयोग भले ही अपने दैनिक जीवन में न किया हो पर फिल्मों के माध्यम से इन शब्दों से निश्चित रूप से परिचित होंगे। यहीं से हमारे जीवन पर फिल्मों का प्रभाव देखने को मिल जाता है।

सिनेमा के इतिहास में एक युग ऐसा रहा है जब भारत के प्रांतीय कलाकार हिंदी सिनेमा अर्थात् बॉलीवुड में अपनी पहचान बनाने की ओर अग्रसर थे जैसे अभिनेत्रियों में वैजयंती माला, हेमा मालिनी, रेखा से लेकर असिन, तमन्ना, दीपिका आदि, अभिनेताओं में रजनीकांत, नागार्जुन, कमल हसन, चिरंजीवी से लेकर धनुष, अल्लु अर्जुन, विजय आदि, संगीत निर्देशकों में इलैयाराजा, ए.आर. रहमान, एस.पी. बाल सुब्रहमण्यम आदि व गायक-गायिकाओं में हरिहरन, एस.पी. बाल सुब्रहमण्यम, पी. सुशीला, कविता कृष्णामूर्ति, के.एस. चित्रा आदि ने दक्षिण भारतीय पृष्ठभूमि से होने के बावजूद दक्षिण भारतीय सिनेमा सहित हिंदी सिनेमा में भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। हिंदी सिनेमा भारत के अन्य सिनेमा से निश्चित रूप से उच्च माना जाता था। प्रान्तीय कलाकारों के लिए बॉलीवुड में अपनी पहचान बनाना मील का पत्थर पार करने जैसा होता था। यह बात सर्वविदित है कि हिन्दी सिनेमा में भारत की प्रत्येक भाषा, प्रत्येक क्षेत्र तथा प्रत्येक कला को सम्मानित किया जाता है। यह सिनेमा विभिन्न भाषा के फिल्मों के उद्योग से बना है और शुरूआत से हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं में फिल्म बनायी जाती रही है।

दशकों तक, बॉलीवुड जो फिल्में बनाता है, को भारतीय फिल्म के पर्याय के रूप में देखा जाता था जबकि अन्य भाषाई उद्योगों को 'क्षेत्रीय' कहा जाता था। 2010 से हिन्दी सिनेमा का ऐसा दौर आया जब फिल्मों का मूल संस्करण रिलीज व सफल होने के कुछ हफ्तों या महीनों के बाद फिल्म को अन्य कई भाषाओं में डब करके टेलीविजन पर प्रसारित किया जाता था जैसे–सदमा, अप्पू राजा, रोजा, बाम्बे, मगधीरा, अरुंधती इत्यादि। यह फिल्में मूलतः दक्षिण भारत की प्रांतीय भाषा में बनी फिल्में होती थी तथा इनके सफल परिणाम के पश्चात् इसे हिन्दी व अन्य कई भाषाओं में डब किया गया। भारत में फिल्मों का अन्य भाषाओं में अनुवाद करके रिलीज किया जाना एक नियमित अभ्यास बन चुका था अन्य भाषाओं की हिट फिल्मों को कुछ समय में हिन्दी भाषा में डब किया जाता था तथा हिन्दी भाषी फिल्मों को अन्य भाषाओं में डब करके रिलीज किया जाता था। गीत-संगीत का भी यही हाल था। अन्य भाषाओं के गीतों के शब्दों को फिल्म की भाषा में उसी धुन में सजाकर प्रस्तुत किया जाता था। जैसे 'चिन्ना चिन्ना आसई' गीत का हिंदी संस्करण 'छोटी सी आशा' गीत है, 'कन्ने कलई माने' गीत डबिंग के बाद 'सुरमई अखियो' गीत में बना, 'कन्नालने' गीत 'कहना ही क्या' गीत बना, 'उई रे' गीत 'तूही रे' गीत

बना, 'वसीगरा' गीत डब्ड होके 'जरा जरा बेहकता है' गीत बना ऐसे अनेकों उदाहरण है। ये गीत हिंदी दर्शकों व श्रोताओं द्वारा खूब सने व पसंद किए गये। चिन्ना चिनना आसई गीत इतना प्रसिद्ध हुआ की के. बालाचंदर ने इसे 'साँग ऑफ मेनी डेकेड्स' कह दिया और ये बात सच भी हई। और इस गीत से ही ए. आर. रहमान ने पूरे भारत में पहचान बनाने की सफल शुरूआत की।

सन् 1948 में बनी 'चंद्रलेखा' नामक तमिल फिल्म प्रथम डब फिल्म थी जो दक्षिण भारतीय होकर हिन्दी भाषा में डब की गई थी। यह फिल्म मूलतः तमिल भाषा में बनी तथा कुछ समय पश्चात् हिन्दी भाषा में डब की गयी। इस फिल्म का निर्देशन एस. एस. वासन ने किया था तथा संगीत निर्देशन किया था एस. रजेश्वरा राव व एम. डी. पार्थसार्थी ने।

इसके बाद रीमेक फिल्में भी बनने लगी जिसमें किसी फिल्म को उसी पटकथा पर दोबारा प्रांतीय कलाकारों को लेकर अपनी भाषाओं में फिल्में बनाई जाती थी। इस वर्ग की फिल्मों में किसी हिट फिल्म का किसी अन्य सिनेमा द्वारा अपनी भाषा व क्षेत्रीय कलाकारों द्वारा बनाकर नवनिर्मित किया जाता था जैसे पुरानी फिल्मों में 'आपकी कसम' (1974) मलयालम फिल्म 'वाझवे मायम' (1970) का हिन्दी रिमेक है। 'आज का अर्जुन' (1990) फिल्म तमिल फिल्म 'एन थाँगची' (1988) का हिन्दी रिमेक है। फिल्म 'एक दूजे के लिए' (1987) तेलुगू फिल्म 'मारोचरित्र' (1978) का हिन्दी रीमेक है। नवीन फिल्मों में सूर्यवंशम (1999), गजनी (2008), बॉडीगार्ड (2011), दृश्यम (2015), कबीर सिंह (2019), मिली (2022), भोला (2023) जैसी अनेकों फिल्में है जो दक्षिण भारतीय फिल्मों का हिंदी रिमेक है।

डब व रिमेक फिल्मों के अतिरिक्त एक अन्य फिल्मों की श्रेणी है जिसे 'अखिल भारतीय फिल्म' कहा जाता है। इसे अंग्रेजी में 'पैन इण्डियन फिल्म' भी कहते हैं। अखिल भारतीय फिल्म का सम्बन्ध भारतीय सिनेमा से है जिसका

उद्भव तेलगू सिनेमा से माना जाता है। पैन इंडियन फिल्म ऐसी फिल्मों को कहा जाता है जो एक साथ कई भाषाओं जैसे–तेलगू, तमिल, मलयालम, कन्नड़ व हिन्दी आदि भाषाओं में एक साथ रिलीज की जाती है। हिन्दी भाषा दक्षिण के कुछ क्षेत्रों को छोड़कर लगभग हर जगह व्यापक रूप से समझी जाती है। गुजरात, महाराष्ट्र, बंगाल, असम, पंजाब और उत्तर पूर्व जैसे स्थानों के लोग हिंदी को ठीक से समझते हैं क्योंकि ये सभी भाषाएँ आर्य भाषाएँ हैं जिनमें कई शब्द और व्याकरण समान हैं अतः इसलिए यह देखा गया है कि इन फिल्मों को अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में डब करने की मांग कम है क्योंकि हिंदी उनके लिए पराई नहीं है। एक फिल्म को हिन्दी के अलावा तेलुगू, तमिल, मलयालम, कन्नड़ जैसी कई भाषाओं में रिलीज किया जाना एक अखिल भारतीय फिल्म का मूल आधार है।

प्रतिष्ठित अंग्रेजी समाचार पत्र टाइम्स ऑफ इंडिया के 3 फरवरी, 2021 में प्रकाशित एक लेख के अनुसार भारत में पहली अखिल भारतीय फिल्म सन् 1959 में रिलीज हो चुकी थी जिसका नाम था 'महिषासुर मर्दिनी'। महिषासुर मर्दिनी एक कन्नड़ फिल्म थी परन्तु इसे भारत में प्रचलित सात भाषाओं में डब और रिलीज किया गया था। इस फिल्म के निर्देशक बी. एस. रंगा है तथा इस फिल्म का संगीत निर्देशन जी. के. वेंकटेश जी ने किया। सन् 1960 में इस फिल्म को हिन्दी में 'दुर्गामाता' नाम से डब करके रिलीज किया गया। 'महिषासुर मर्दिनी' के पश्चात् कोई भी फिल्म चार भाषा से अधिक भाषाओं में डब नहीं की गई। यद्यपि यह फिल्म 'अखिल भारतीय फिल्म' की श्रेणी में आने वाली प्रथम फिल्म थी परन्तु वास्तव में पहली पैन इंडियन फिल्म जिसने सफलता के नये शिखर को छुआ वह सन् 2015 में आई फिल्म 'बाहुबली-द बिगनिंग' थी। इस फिल्म का निर्देशन 'एस. एस. राजामौली' ने किया था व संगीत दिया था 'एम. एम. करवानी' ने। इसके बाद सन् 2017 में बाहुबली-द कंक्ल्यूजन आयी जो अब तक की सबसे बड़ी हिन्दी फिल्म बन गई।

निर्देशक एस. एस. राजामौली, जिनके बारे में कहा जाता है कि उन्होंने 'बाहुबली' की सफलता के साथ एक अखिल भारतीय फिल्म की परिभाषा बदल दी, के अनुसार, ''एक अखिल भारतीय फिल्म का मतलब यह नहीं है कि विभिन्न भाषाओं के कलाकार एक साथ आते हैं। यह सब इसका हिस्सा है। एक अखिल भारतीय फिल्म का मतलब एक ऐसी कहानी और भावना है जो भाषा की परवाह किए बिना हर किसी से जुड़ती है।''(द हंस इंडिया)

यह फिल्म दुनिया भर में विभिन्न भाषाओं में रिलीज हुई थी। फिल्म निमार्ताओं ने एक नया फिल्म आंदोलन शुरू किया, यानी एक ही फिल्म को विभिन्न भाषाओं में रिमेक करने की बजाय, वे एक ही फिल्म को विभिन्न भाषाओं में डब कर रहे हैं। (मनोज कुमार, गवेटा रंजीत)

तेलुगू सिनेमा ने अखिल भारतीय फिल्मों के विपणन में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। इसने मुख्य रूप से दो रणनीतियों को नियोजित किया - अपने गृह क्षेत्र के बाहर फिल्म को बढ़ावा देना और अधिक दृश्यता के लिए अन्य क्षेत्रीय सितारों के साथ सहयोग करना। (श्रीवत्सन)

पैन इंडियन फिल्मों के गीतों में जिस प्रकार दक्षिण भारतीय धुनों वाद्यों व कोरस का प्रयोग किया जाता है वह उत्तर भारत व अन्य स्थान के श्रोताओं दर्शकों के लिए बहुत ही अनोखा होता है तथा भले उन्हें उस वाद्य व अन्य तत्वों का नाम न ज्ञात हो फिर भी उन्हें वह गीत अपनी तरफ आकर्षित करता है। जैसे बाहुबली के थीम सॉन्ग में जो कोरस है वह इतना आकर्षक है कि जिसने भी फिल्म देखी है उसे यह धुन याद होगी।

बाहुबली के गीत 'धीवरा' का अर्थ उत्तर भारतीय दर्शकों को पता भी नहीं होगा पर संगीत के कारण इसे खूब सुना गया। 'कान्हा सो जा जरा' गीत में अभिनेत्री का दक्षिण भारतीय परिधान, आभूषण व इस गीत में प्रयोग हुए दक्षिण भारतीय वाद्यों के नाम भले ही हम न जानते हो परंत इस गीत को देखकर हम दक्षिणी सभ्यता से अति सौंदर्यपूर्ण तरीके से जुड़ जाते है। इसी फिल्म के गीत 'जयजयकारा' पूरे भारत में खूब सुना गया इस गीत को कैलाश खेर ने गाया जो की मूलतः हिन्दी गायक है तथा अन्य कई भाषाओं में गीत गाये है। इस फिल्म के गीत कि अनुभव के विषय में कैलाश खेर बताते है की उन्हें इस फिल्म के गीत के लिये जब कीरवानी जी ने बुलाया तो उन्हें लगा कोई तेलुगू गाना है, स्टूडियो जा कर पता

चला की हिन्दी गीत तब तक उन्हें नहीं पता था कि कोई इतनी बड़ी फिल्म बन रही है। उन्हें लगा किसी डब फिल्म का हिन्दी गीत है। कैलाश खेर जी कहते है की ''हमे नहीं बताया कि कोई इतनी बड़ी फिल्म है, हमे लगा कोई फिल्म होगी जो डब भी हो रही है।'' (खेर) कैलाश खेर की आवाज इतनी अनोखी है की उनकी आवाज से सजे इस गीत को पूरे भारत ने खूब प्यार दिया। इन्होंने 'कौन है वो', 'जयजयकारा' व 'जल रही है' गीत में अपनी आवाज दी है। इस फिल्म के गीत में वाद्यों का ऐसा प्रयोग सुनना पूरे भारत के दर्शकों के लिये नवीन प्रयोग था तथा इसे अनोखेपन के कारण ही इस फिल्म के गीतों को संपूर्ण भारत वर्ष में खूब सराहा गया। इस फिल्म के संगीत निर्देशक एम. एम. कीरवानी के विषय में संगीत निर्देशक ए. आर. रहमान ने एक इंटरव्यू के दौरान कहा कि ''एम. एम. कीरवानी एक महान कंपोजर है, एम एम कीरवानी 2015 में रिटायर होने वाले थे जबकि सही मामले में उसी साल उनका करियर शुरू हआ। ये एक महान कहानी है, इसे में अपने बच्चों को सनाता हूँ।''(रहमान) इस प्रथम पैन इंण्डियन फिल्म के अद्भुत संगीत को देश के कोने-कोने में सुना गया। इस फिल्म के गीतों में दक्षिण व उत्तर भारतीय वाद्यों का प्रयोग इसे विशेष बनाता है। घटम्, गिटार, वायलिन, नागस्वरम्, बांसुरी, नगाड़े इत्यादि वाद्यों का बखूबी प्रयोग इस फिल्म के गीतों में सुनने को मिलता है।

सन् 2018 में आयी अखिल भारतीय फिल्म के. जी. एफ.- चैप्टर 1 के निर्देशक प्रशांत नील तथा संगीत निर्देशक रवि बसरूर है। रवि बसरूर मुख्य रूप से बैक ग्राउंड म्यूजिक बनाते है। एक साक्षात्कार के दौरान बसरूर कहते है कि–''ये सब हमने बाँटा है हिन्दी, कन्नड़, तमिल, तेलग म्यूजिक का कोई भाषा नहीं है।''(बसरूर) इस फिल्म की प्रचलित धुन 'तन्ना री नारे' के विषय में बसरूर कहते है कि ये धुन अथवा गीत भाषा के बंधन में ना बंधे इसलिए उन्होंने इस धुन में शब्द ही नहीं डाले। धुन बनाते समय ही उन्होंने निश्चय किया की यह धुन यूनिवर्सल अथवा सार्वभौमिक होगी और यह बात सत्य साबित हुई।

के.जी.एफ. फिल्म की यह धुन दक्षिण भारत सहित उत्तर भारत की जनता के बीच भी इतनी प्रसिद्ध हुई की लोगों ने इसे अपने मोबाइल की रिंगटोन भी बनाया। केजीएफ 2 में अभिनय करने वाले टंडन कहते हैं, ''मुझे लगता है कि यह 'पैन इंडिया' प्रचार एक अच्छी बात है। आज हमारे सभी उद्योग एक बड़ी ताकत के रूप में एकत्रित हो रहे हैं। उत्तर या दक्षिण की फिल्म के बारे में कुछ भी नहीं है। एक अखिल भारतीय फिल्म वह होती है जो सभी भाषाओं और बाधाओं को पार कर जाती है, फिर भी दिल से भारतीय होती है। जब मैं केजीएफ 2 की शूटिंग परी कर चूका था और राजस्थान में एक और फिल्म की शूटिंग कर रहा था, तो लोग मेरे पास आए और कहा 'केजीएफ केजीएफ', मुझे आश्चर्य हुआ कि उस राज्य में लोगों ने कन्नड़ फिल्म का आनंद लिया। वह कितना शानदार हैं?' (सूरी)

सन् 2021 में आयी फिल्म पुष्पा - द राइज के गीत 'श्रीवल्ली' पर संपूर्ण भारत के सिनेमाघरों में दर्शकगण पर्दे पर प्रसारित होने के साथ ही गाते व नृत्य करते थे। इस फिल्म का संगीत निर्देशन देवी श्री प्रसाद ने किया था। डी एस पी के अनसार उन्हें लगा था कि यह नाम देश के हर प्रांत में प्रसिद्ध न होने के कारण वे भ्रम में थे परंतु अभिनेत्री के किरदार का नाम होने की वजह से उन्होंने नहीं बदला। श्रीवल्ली देवी पार्वती का नाम है तथा तमिल व तेलुगू में अत्यंत प्रसिद्ध भी है। इस गीत के गायक जावेद अली एक साक्षात्कार में बताते है कि ''जिस तरह यह गीत हर इंसान गुनगुना रहा है तथा ट्रेंड कर रहा है यह चमत्कार से कम नहीं'' (अली) उनके लिए यह अनुभव चमत्कार से कम नहीं। जावेद अली देवी श्री प्रसाद को धन्यवाद ज्ञापित करते है की उन्होंने इस गीत के लिए उन्हें चुना। गीत संगीत के साथ इस फिल्म का संवाद अथवा डायलॉग भी अत्यंत प्रसिद्ध हुआ।

सन् 2022 में आयी फिल्म 'आरआरआर' एस. एस. राजमौली के निर्देशन में बनी एक अत्यंत सफल फिल्म है। इस फिल्म के गीत 'नाटू-नाट' ने ऑस्कर जीत कर जो इतिहास रचा है उस पर कोई भी भारतीय गौरवान्वित हए बगैर नहीं रह सकता। इस गीत की प्रसिद्धि का इससे अच्छा प्रमाण क्या होंगा। इस फिल्म में भी राजमौली के साथ बेहतरीन काम कर चुके एम. एम. कीरवानी ने ही संगीत दिया था। इस फिल्म के संगीत के लिये कीरवानी को 'पद्मश्री' से भी सम्मानित किया गया।'' संगीतकार व गायक अमित त्रिवेदी के अनुसार ''इस गीत के लिए पाँच अलग-अलग फिल्म उद्योग के कलाकार लाये गये ऐसा पहली बार है जो की अपने आप में एक नया व अनोखा अनुभव है।'' निश्चित ही ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि यह एक अखिल भारतीय फिल्म थी।

इसी वर्ष अयान मुखर्जी के निर्देशन में बनी फिल्म 'ब्रहमास्त्र' भी एक पैन इण्डियन फिल्म की श्रेणी में आने वाली फिल्म है। इस फिल्म के गीत ने भी पूरे देश में खूब धूम मचाया। 'केसरिया' गीत के जितने भी संस्करण बनाए गए जैसे कन्नड़ में 'केसरिया रंग', तमिल में 'तितिरियाई', तेलुगू में 'कुमकुमला', मलयालम में 'कुंकुमाके' ये सभी खूब सने गये व पसंद किए गये। इस फिल्म में संगीत निर्देशक प्रीतम ने बेहतरीन संगीत दिया। गीत 'देवा देवा' व 'डांस का भूत' पर तो लोग खूब थिरके।

सन् 2022 में ही एक और बेहतरीन व असाधारण फिल्म बनी जिसका नाम था 'कान्तारा'। यह असाधारण इस मामले में थी की इस फिल्म का निर्देशन, लेखन व अभिनय ऋषभ शेट्टी ने किया तथा बेहतरीन ढंग से किया। काँतारा में संगीत दिया बी. अजानीश लोकनाथ ने। इस फिल्म का गीत 'वराह रुपम' इतना दिव्य है की वह आपको एक अलग दुनिया में प्रवेश कराता है।

सन् 2023 में आयी फिल्म 'आदिपुरुष' फिल्म निर्देशक ओम राउत के निर्देशन में बनी बड़ी व महँगी फिल्म थी। हालाँकि यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर कमाल नहीं कर पायी परत इस फिल्म के गीतों ने खूब प्रसिद्धि पायी। इस फिल्म में अजय-अतुल की बेहतरीन जोड़ी ने संगीत दिया था। फिल्म का गीत 'जय श्री राम राजा राम' रिलीज होते ही सोशल मीडिया पर और फैंस के बीच छा गया था। एक इंटरव्यू में जय श्री राम गाने की सफलता पर प्रतिक्रिया देते हए अजय ने कहा, ''जब झिंगाट आई तो हमारे अलावा हर किसी ने उस गाने को खूब पसंद किया था, लेकिन फिर हमें एक ऐसा गाना बनाने के लिए कहा गया जो झिंगाट को मात दे सके,

लेकिन हम भी नहीं कर पाए। झिंगाट एक ब्लॉकबस्टर गाना था। और अब, जय श्री राम ने इसकी जगह ले ली है।'' (दीक्षा)

एक यूवा फिल्म निर्देशक अटली के निर्देशन में बनी फिल्म 'जवान' भी इसी वर्ष रिलीज हई। उत्तर व दक्षिण के बड़े-बड़े अभिनेता व अभिनेत्रियों को लेकर बनायी गई यह फिल्म बड़े बजट की फिल्म थी तथा सफल भी हई। इस फिल्म के सभी गीत चाहे वो 'रमईया वास्तवैया' हो या 'चलेया' हो या 'चंदा जैसा तू' हो सभी गीत पूरे देश में प्रसिद्ध हुए।

अखिल भारतीय फिल्में व इन फिल्मों का संगीत सम्पूर्ण भारत के दर्शकों व श्रोताओं को आकर्षित करती है। निश्चित रूप से ऐसी फिल्में सांस्कृतिक व भाषाई बाधाओं को पार करने का प्रयास करती है। पैन इंडियन फिल्म का एक फायदा यह भी हुआ की जो कलाकार पहले पृष्ठभूमि की सीमा में बंधे थे उन्हें परदे पर साथ देखा जाया जाने लगा। उपर्युक्त उदाहरण इस बात का प्रमाण है की आधुनिक युग में पैन इंडियन अथवा अखिल भारतीय फिल्मों का बोलबाला है। इस यात्रा को देखते हुए हम ऐसे भविष्य की कल्पना कर सकते है जब सम्पूर्ण भारत का सिनेमा भाषाई व क्षेत्रीय सीमा के बन्धनों से मुक्त होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

जब अखिल भारतीय फिल्मों, सितारों और शो का राज था, द हंस इंडिया, हैदराबाद, 1/1/2022

कुमार, मनोज, रंजीत गबेटा, बाहुबली 5 साल की हो गई, द इण्डियन एक्सप्रेस, 11/7/2020

श्रीवत्सन, एस. तेलुगू सिनेमा की अखिल भारतीय रणनीति, द हिंदु, 7/1/2022

खेर, कैलाश, Kailash Kher Exclusive Interview : Bahubali में गाना गाने की कहानी सुनिये कैलाश खेर की जुबानी, NBT Entertainment, 5/12/2020
https://youtu.be/QH3OYmX-jdo?si=7B-8d9vCbxMftugu

रहमान, ए.आर., A.R. Rahman Interview i katraar, CNN-News 18, 26/1/2023
https://youtu.be/lZC3xp49q-c?si=5FZr4tR32dT3Mm4D

बसरूर, रवि, Making of KGF Songs and BGM, Filmi Fever, 1/11/2019
https://youtu.be/v5jKgy72R_w?si=nk4SMviJdQXFjGMB

सूरी, ऋषभ, आदिपुरुष, लाइगर केजीएफ प्रोजेक्ट के जवानः पैन इंडिया फिल्म का जूनून, हिन्दुस्तान टाईम्स, 11/7/2023

अली, जावेद, Pushpa Shrivalli song breaks all records singer Javed Ali exlusive interview, 25/1/2022
https://youtu.be/KbKsMGJ2fMk?si=6RFGR54RcXS8aAiT

पाठक, दीक्षा, आदिपुरुष, 'यह दर्शकों के लिए एक ट्रीट है', आदिपुरुष के गाने जय श्री राम की सफलता से गदगद हुए अजय-अतुल, अमर उजाला, 16/6/2023